## महत्वपूर्ण एवं खास

### चिट्ठी लिख-लिख जग मुआ

अब डाटा चोरी होने का इतना आतंक तो नहीं होना चाहिए कि भले-भले आदमी जैसे कि सांसद भी ई-मेल, इंटरनेट, फेसबुक, ट्वीटर और इंस्टाग्राम जैसी नयी तकनीकों का इस्तेमाल छोड़कर चिट्ठियां लिखने लगें। अब नयी तकनीक के साथ मध्ययुगीन सोच तो रखी जा सकती है लेकिन पुरानी सोच से निकलने की छटपटाहट में नयी तकनीक भी अपनायी जा सकती है। इससे जरूरी नहीं कि आप पर पोंगापंथी होने का ही आरोप लगे। नये किस्म के आरोप भी लग सकते हैं। नयी तकनीक हो और नए आरोप हों तो ही मजा है। नयी तकनीक हो और आरोप पुराने हों, यह तो अच्छी बात नहीं है। पर दुविधा देखिए कि खुद प्रधानमंत्रीजी की पार्टी के सांसद ही अपनी बात कहने के लिए नयी तकनीक का इस्तेमाल करने की बजाय पुरानी तकनीक का इस्तेमाल करते हुए चिट्ठियां लिख रहे हैं। कहीं उन्हें यह डर तो नहीं कि अगर उन्होंने यही बातें अपनी फेसबुक पोस्ट पर डाल दीं तो उन्हें भी बरेली के डीएम या वैसे ही दूसरे अधिकारियों की तरह अपनी फेसबुक पोस्ट डिलीट करनी पड़ सकती है या कोई और सजा भी मिल सकती है। प्रधानमंत्रीजी नयी तकनीक अपनाने पर इतना जोर देते हैं कि उन्होंने तो अपने सांसदों के लिए फेसबुक लाइक्स का कोटा भी तय कर दिया है। इससे जुकरबर्ग को और फायदा हुआ होगा, उसका और ज्यादा डाटा बिकेगा। खैर, यह जरूरी नहीं कि ऐसे सांसद पार्टी से विद्रोह कर रहे हों। हालांकि अतीत के उदाहरण तो यही दिखाते हैं कि चिट्ठियां लिखने वाले अंततः बागी ही निकलते हैं। फिर अगर वे प्रधानमंत्री के नयी तकनीक अपनाने के आह्वान को नहीं मान रहे हैं और चिट्ठियां लिख रहे हैं तो इसे भी एक तरह की बगावत ही मानना चाहिए। गनीमत यही है कि ऐसे बागियों को पाकिस्तान भेजने की मांग अभी नहीं उठी है। चिट्ठियां तो अब देखिए प्रेमी भी नहीं लिखते। नयी पीढ़ी के प्रेमियों से यह मत पूछ लेना कि प्रेम पत्र लिखा या नहीं चिट्ठियां पहले साहित्यकार वगैरह ही लिखते थे। पर अब वे भी नहीं लिखते। परदेसी पिया भी पहले चिट्ठियां लिखते थे, पर वे भी अब फोन ही करते हैं। चिट्ठियां लिखने वालों की सूची में बेचारे नेताओं का जिक्र तो काफी बाद में आता है। पर हलचल सबसे ज्यादा उन्हीं से मचती थी। किसी प्रेमी का प्रेम पत्र पकड़े जाने पर तो बस ठुकाई ही होकर रह जाती थी, पर नेता की चिट्ठी से तो सरकार हिल जाती थी। अभी चिट्ठियां लिख रहे भाजपा के इन दलित सांसदों से सरकार तो हिली या नहीं, पता नहीं, पर संवेदनाएं जरूर हिल रही हैं और लगता है उन्हें लाइक्स भी किसी फेसबुक पोस्ट से ज्यादा ही मिल रहे हैं।

### कृत्रिम बुद्धि मानव सभ्यता के लिए खतरा

इन दिनों दुनियाभर में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस यानी कृत्रिम बुद्धि को लेकर लगातार चर्चा हो रही है। वैज्ञानिक युग के उभार के दौर में यह उम्मीद दशकों पहले जाहिर की गई थी कि भविष्य में तकनीक ऐसे दौर में पहुंच जाएगी, जब इंसान के ज्यादातर काम अंगुलियों के इशारे भर से हो जाएंगे। कंप्यूटर, मोबाइल और एटीएम वगैरह को देखें, तो कृत्रिम बुद्धि हमें उस दौर की ओर ले जाती हुई दिख भी रही है। इंटरनेट पर जानकारियों का खजाना मुहैया कराने वाला गूगल बड़े जोर-शोर से कृत्रिम बुद्धि पर काम कर रहा है। गूगल के कृत्रिम बुद्धि रूप डीपमाइंड ने अल्फागो नाम से एक कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार किया है। इसका मकसद मशीन में कृत्रिम बुद्धि पैदा करना है, जो इंसानी दिमाग जैसा या उससे भी बेहतर प्रदर्शन करे। यानी इंसान की तरह सोचना, समझना और प्रतिक्रिया देना। गूगल के इस प्रोग्राम को पिछले साल तब बड़ी सफलता मिली, जब इसने गो नामक खेल के दिग्गज खिलाड़ी ली सीडोल को हरा दिया। तब यह किसी पेशेवर ब्लो' खिलाड़ी को हराने वाला पहला कंप्यूटर प्रोग्राम बना था।

## वास्तु टिप्स

### उपहार में मिले यह सामान तो समझ लीजिए, देने वाला आपका अच्छा नहीं चाहता

उपहार का लेन-देन जीवन का एक हिस्सा है जिसे पाकर हर व्यक्ति खुश होता है। लेकिन देने वाले की नीयत कैसी है यह जानना भी जरूरी है क्योंकि अगर देने वाले की नीयत साफ नहीं होती तो उपहार में आपको कुछ ऐसा भी दे सकता है जो आपकी खुशियों को ग्रहण लगा सकता है। इसलिए जब कोई उपहार में इन 8 चीजों को दे तो समझ लीजिए वह आपका दिल से भला नहीं चाहता और इनके उपहार को घर में नहीं रखना चाहिए।हिंसक जानवरों जैसे शेर, बाघ, चीता की तस्वीर या मूर्ति उपहार में लेना देना।डूबते हुए जहाज की मूर्ति उपहार में मिलना और उसे घर में रखना अशुभ फलदायक होता है। इससे आर्थिक नुकसान होता है।चाकू छुड़ी न तो किसी को उपहार में देना चाहिए और अगर कहीं से मिले तो उसे घर में नहीं रखना चाहिए। यानी उपहार में चाकू का लेन देन न करें इससे परिवार में कलह होता है।काले वस्त्र कभी किसी को उपहार में नहीं देना चाहिए।

## दिग्विजय को दिग्विजयी बनायेगी नर्मदा परिक्रमा

पूर्व मुख्यमंत्री और आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय महासचिव दिग्विजय सिंह की नर्मदा यात्रा अपने अंतिम पड़ाव पर है। 30 सितम्बर 2017 विजयदशमी के दिन से प्रारम्भ यह यात्रा 9 अप्रैल 2018 को शारदा मंदिर रेत घाट तट बरमान खुर्द जिला नरसिंहपुर में सम्पन्न होगी। आज दिनांक तक इस यात्रा ने 188 दिन पूर्ण कर लिए हैं। लगभग 3100 किलोमीटर की यात्रा तय करके पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह लगातार अपने संकल्प को पूर्ण करने की दिशा में अग्रसर है। विशुद्ध रूप से धार्मिक नर्मदा परिक्रमा की बात करने वाले दिग्विजय सिंह का मानना है की मैंने अपने जीवन में सबसे अधिक सुख की अनुभूति इस यात्रा के माध्यम से प्राप्त की है। 188 दिनों की इस यात्रा में समुद्र पहाड़ कछार वृहद जंगल पथरीले रास्ते से गुजरते हुए समापन की तरफ बढ़ रहे हैं। परिक्रमावासियों में अपार उत्साह देखने को मिल रहा है। दिग्विजय सिंह के साथ उनकी पत्नी अमृता सिंह इस यात्रा में पूरे समय उनके साथ साथ रही। अमृता सिंह कहती है की मैंने अपने पत्नी होने का धर्म निभाने इस यात्रा में शामिल होने का निर्णय लिया था। यात्रा की शुरुआती दिनों में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा ,फिर यह आदत में शुमार हो गया। कई बार ऐसा लगा मानों अब एक भी कदम आगे बढ़ना मुश्किल है ,लेकिन मां नर्मदा के आशीर्वाद से हर सुबह एक नए उमंग और हौसले के साथ हम आगे बढ़ते गए। इस यात्रा में श्रद्धालुओं ने दिल खोलकर हमारा स्वागत किया। लोगों के प्यार और दुलार के सामने पांवों के छालें,पैर दर्द बोने होने लगे है। दिग्विजय सिंह जी की इस यात्रा के हर पहलुओं को देखने समझने और भविष्य की राजनैतिक संभावनओं को तलाशने मैंने भी मण्डला शहर से 20 किमी दूर लिंगा पॉंडी तक यात्रा की। मैंने यात्रा की शुरुआत के साथ ही लेख लिखा था। जिसका शीर्षक था 'राजा की कठोर तपस्या के निहितार्थ' जो काफी चर्चा में रहा था, मैंने इस यात्रा के बारे में जो सुना और पढ़ा था उससे कहीं ज्यादा मिला। सुबह मां नर्मदा के तट पर भजन पाठ, कन्या पूजन और आरती के बाद परिक्रमावासियों का जत्था दिग्विजयसिंह जी और अमृता सिंह के साथ नर्मदे हर के जयघोष के साथ अगले पड़ाव की ओर आगे बढ़ जाता हैं। हलकी वर्षा की वजह से राह में गीली मिट्टी हैं घने जंगलों से होते हुए यह काफिला उबड़-खाबड़ और पथरीले रास्तों में साथ अपने मंजिलों की तरफ आगे बढ़ रहा हैं।

## विकास का सच

भारत के आर्थिक विकास पर विश्व बैंक की विवेचना *जीडीपी दर पर बेरोजगारी भारी* विसंगतियों से परिपूर्ण है। वैसे इस दौरान अच्छे भरपूर मानसून की भविष्यवाणी के साथ देश की मौजूदा वित्तीय वर्ष में आर्थिक विकास दर 7.3 फीसदी के अनुमान को भी पार कर सकती है। भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा विकास दर का पूर्वानुमान 7.4 प्रतिशत अपने अधिकतम स्तर पर था। वित्तमंत्री अरुण जेटली ने अपने बजट भाषण में कहा था कि अब हम 8 प्रतिशत से अधिक की विकास दर की वृद्धि हासिल करने की ओर अग्रसर हैं। विगत वर्ष की तीसरी तिमाही में वास्तव में अर्थव्यवस्था 7.2 प्रतिशत की दर से बढ़ी थी। विमुद्रीकरण और जीएसटी के प्रभावों से उबरकर अर्थव्यवस्था अब हर तिमाही में प्रगति पर जरूर है, किंतु इन दो व्यवधानों की वजह से हम आज भी सम्पूर्ण लाभ से दूर हैं। यह गौरतलब है कि विमुद्रीकरण से पूर्व भारत की विकास दर 8.2 फीसदी थी। सही मायनो में यह विकास निश्चितताओं से परिपूर्ण नहीं है। दरअसल, सीरिया के गृहयुद्ध से उपजा राजनीतिक संकट कच्चे तेल की कीमतों के बढ़ने की ओर इशारा कर रहा है।

इधर आम आदमी पहले से ही पेट्रोलियम पदार्थों के बढ़ते दामों से परेशान है। यदि और बढ़ोतरी हुई तो वर्तमान सरकार के लिए संकट खड़ा हो सकता है। वर्ष 2019 के आम चुनाव के दृष्टिगत सरकार वैसे भी लोकलुभावन परियोजनाओं को क्रियान्वित करना चाहेगी। ऐसे में पेट्रोलियम पदार्थों के दामों में बढ़ोतरी पर नियंत्रण सरकार के आर्थिक विकास की दौड़ में निश्चित रूप से व्यवधान ही उत्पन्न करेगा। दूसरी सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी की है, जिसे विश्व बैंक ने भी अपनी दक्षिण एशियाई आर्थिक फोकस रिपोर्ट में शामिल किया है। जिसके अनुसार भारत को अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु 18 फीसदी की दर से विकास करना होगा।

## समृद्ध खेल दर्शन चाहिए देश को

रियो ओलम्पिक खेलों में अभूतपूर्व जीत, आमिर खान द्वारा बनाई गई फिल्म दंगल का ब्लाक-बस्टर प्रदर्शन, महिला क्रिकेट द्वारा वर्ल्ड कप विजय तथा अभी गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल खेलों में उम्दा प्रदर्शन इस तथ्य को बखूबी रेखांकित करते हैं कि देश के युवा खेल जगत में धाक जमाने को तैयार हैं, अगर उन्हें सम्बन्धित पक्षों से समयोचित प्रोत्साहन मिले। राष्ट्रमंडल के 88 साल के इतिहास में भारत का यह तीसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। किसी ने इसी दौरान लिखा 'चमके गुदड़ी के लाल।' इसे इस तरह कहते आगे बढ़ें-'चमके गुदड़ी के लाल और ललनाएं' क्योंकि ललनाओं की चमक का आभामंडल इतना खूबसूरती से उभरा है कि वो भाषा की बनगत के ढांचों को भी अवश्य समृद्ध करेगा। बहरहाल यहां मुख्य सवाल यह है कि जब अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर गरीबतम परिवार और उनके बच्चे मुख्यत अपने प्रयासों से देश का परचम फहरा सकते हैं तो अगर सरकारें और समाज उनके साथ सच्चे दिल से खड़े हों तो वे भारत को खेलों में तो कम से कम उसके आकार अनुरूप सम्मान दिला ही सकते हैं। फिलहाल तो उनकी मुख्य भूमिका यही नज़र आती है कि जब ये खिलाड़ी अपने परिवारों के तमाम बजट को निचोड़ कर, ऐड़ी चोटी का जोर लगाकर मैडल जीत लेते हैं तो राजनेताओं व समाज के नेताओं में इनके साथ फोटो खिंचवाने की होड़-सी लग जाती है। जिस समय ये खिलाड़ी आर्थिक-सामाजिक तमाम तरह की विपरीत परिस्थितियों से जूझ रहे होते हैं, उस समय विरले ही इनका हाथ थामने को आगे आते हैं। महिलाओं, दलितों व अल्पसंख्यक सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले खिलाड़ियों के संदर्भ में यह हकीकत और भी भयावह रूप में सामने आती है। कई प्रतिभाएं उपयुक्त खेल सुविधाओं, सही कोचिंग, किट व डाइट के अभाव में रास्ते में ही दम तोड़ जाती हैं। चयन में व्याप्त भाई-भतीजावाद द्वारा कितनों के ही पंख कतर दिए जाते हैं। कितनी ही यौन शोषण की शिकार प्रतिभाएं सालों साल अपना दर्द साथ लिए रास्ते तलाशने को मजबूर होती हैं। यह हमारे लिए विचारणीय सवाल होना चाहिए। सवाल उभर कर आता है कि हमारे देश की खेल उपलब्धियां देश की आबादी व आकार के अनुरूप क्यों नहीं हैं एक भीम अवार्डी खिलाड़ी व वर्षों के प्रशासकीय अनुभव के आधार पर मुझे लगता है कि देश में एक व्यापक जन खेल संस्कृति पैदा करने के सरोकार से खेलों पर विभर्श खोलना चाहिए व संसाधनों को उसी दिशा में लगाना चाहिए। खेलों के स्वस्थ शारीरिक व मानसिक विकास की क्षमता से रिश्ता अभी कायम ही नहीं हुआ। वरना ये कैसे हो जाता कि पंजाब जैसे राज्य का बड़ा नौजवान तबका नशे की चपेट में चला जाए और हम कुछ कर ही न पाएं।

## भारत-चीन का एका बदलेगा तस्वीर

भारत में पेट्रोलियम पदार्थों के दामों को लेकर हमेशा ही राजनीतिक उठापटक होती रहती है। ऐसे में ऊर्जा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का बयान कि चीन और भारत पेट्रोलियम आयात के मुद्दे पर एशियाई प्रीमियम के विरुद्ध एकमत होकर सौदे की टेबल पर आने को तत्पर हैं, अपने आप में महत्वपूर्ण है। दरअसल, वैश्विक ऊर्जा का अर्थशास्त्र मूलतः तीन प्रमुख कच्चे तेल आयातकों अमेरिका, चीन और भारत के आसपास घूमता है। कार्टेल उस नियंत्रक समूह को कहते हैं जो किसी वस्तु के मूल्य को बढ़ाने के लिए बनाया जाता है।

भारत सरकार ने यह घोषणा की है कि वह तेल उत्पादकों के कार्टेलाइजेशन के खिलाफ सामूहिक क्रय क्षमता बढ़ाने के लिए चीन से हाथ मिलाने जा रहा है। यदि ऐसा हुआ तो अंतर्राष्ट्रीय तेल बाजार का स्वरूप ही बदल जाएगा क्योंकि सामूहिक खरीदार होने पर भारत और चीन अमेरिका की खपत से कहीं ज्यादा बड़े ग्राहक बन जाएंगे। यद्यपि अभी 210 मिलियन मीट्रिक टन वार्षिक खरीद के साथ भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है परन्तु फिर भी वह खाड़ी देशों से बेहतर मूल्य पर सौदा करने में असमर्थ रहा है। थोक खरीद पर छूट पाना तो एक तरफ, सऊदी अरब जैसे पश्चिम एशियाई देश एशियाई प्रीमियम के नाम पर भारत व जापान जैसे देशों से अधिक मूल्य वसूलते हैं। जापानी प्रोफेसर योशिकी ओगावा के अनुसार एशियाई आयातक एशियाई प्रीमियम के नाम पर 5 से 10 अरब डालर धन अधिक व्यय करते हैं। वैसे यह इस क्षेत्र में भारत का तीसरा प्रयास है। पूर्व में भी दो बार यह प्रयास किया जा चुका है। पहली बार तत्कालीन तेल मंत्री मणिशंकर अय्यर ने इस भेदभावपूर्ण एशियाई प्रीमियम के खिलाफ दो मंत्रिस्तरीय दौरों की मेजबानी की थी। पहले चीन, जापान, दक्षिण कोरिया जैसे प्रमुख एशियाई उपभोक्ताओं और फिर एशियाई उत्पादकों की एकजुटता का प्रयास। परिणामतः उन्हें महीने भर में ही तेल मंत्रालय के पोर्टफोलियो से हाथ धोना पड़ा। एक और प्रयास यूपीए सरकार ने जापान के साथ संयुक्त ऊर्जा सोर्सिंग के रूप में किया था लेकिन वह भी विफल ही रहा। अतएव ऊर्जा मंत्री का उपरोक्त बयान काफी महत्वपूर्ण है। अगर यह सम्भव हो गया तो भारत में तेल आयात का मूल्य 4 से 6 डॉलर प्रति बैरल कम हो जाएगा। इससे भारतीय ग्राहकों के लिए पेट्रोलियम उत्पाद एक झटके में ही 1.40 से 2.10 रुपये तक सस्ते मिल सकेंगे।

## सांस्कृतिक चेतना जगाने का वक्त

विश्वनाथ सचदेव

पिछले दिनों मुंबई में 'इप्टा' की 75वीं सालगिरह मनाई गई। इप्टा यानी इंडियन पीपल्स थिएटर एसोसिएशन का जन्म 1942 में हुआ था। यह वही वर्ष था जब महात्मा गांधी ने मुंबई के ग्वालिया टैंक में हुई विशाल सभा में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा देश को दिया था। उसी वर्ष महान वैज्ञानिक डॉक्टर होमी भाभा के नेतृत्व में देश के युवा रंगकर्मियों, रचनाकारों ने इप्टा के माध्यम से एक सामाजिक, सांस्कृतिक क्रांति का भी आह्वान किया था। राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मोर्चों पर एक साथ लड़ी जाने वाली लड़ाई की यह शुरुआत एक नए भारत के करवट लेने की आहट थी। यह नया भारत एक ओर राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की कगार पर खड़ा था तो दूसरी ओर सामाजिक सोच की विकृतियों से लड़ने के लिए भी आमादा था। देश के युवा, किसान, मजदूर, महिलाएं यानी समाज का हर तबका बदलाव के लिए बेचैन हो रहा था। इप्टा की 75वीं सालगिरह के जश्न में जावेद अख्तर ने जब यह कहा कि 75 साल पहले यदि इप्टा का जन्म न हुआ होता तो आज होता, तो एक अजीब-सा रोमांच पसर गया था वहां उपस्थित लोगों के बीच। फिर जावेद अख्तर ने अपनी बात का खुलासा करते हुए कहा था कि आजादी के सात दशक बाद भी सामाजिक जीवन की विसंगतियों से उबर नहीं पाए हैं हम। इस प्रश्न का उत्तर तलाशने के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। हमारे अखबार, हमारे टीवी चैनल इन विसंगतियों, विडंबनाओं को उजागर करने वाले समाचारों से भरे रहते हैं। स्वतंत्रता, समानता, न्याय और बंधुता के आदर्शों को रेखांकित करने वाला संविधान तो हमने अंगीकृत कर लिया है, लेकिन इन आदर्शों के अनुरूप समाज बनाने की आवश्यकता को हम आज भी ईमानदारी से अनुभव नहीं कर रहे। इन सात दशकों में प्रगति के कई आयामों को हमने साकार किया है पर हकीकत यह भी है कि हमारा भारत आज भी धर्मों, जातियों, वर्गों, भाषाई तबकों और क्षेत्रीयता के टुकड़ों में बंटा हुआ है। देश के अलग-अलग हिस्सों में आए दिन होने वाले सांप्रदायिक दंगे, तथाकथित ऊंची और नीची जातियों के नाम पर लगातार हो रही हिंसा, मासूम बच्चियों के साथ होने वाली अमानुषिकता की घटनाएं, किसानों द्वारा आत्महत्याएं, जमीन के टुकड़ों और भाषा के नाम पर आए दिन होने वाले झगड़े. यह सब वही मंजर दिखाते हैं जो 75 साल पहले इप्टा जैसे आंदोलन की आवश्यकता बने थे। अब देश स्वतंत्र है। एक ऐसी जनतांत्रिक व्यवस्था में जी रहे हैं हम, जिसे हमने अपने लिए स्वीकार किया है। देश में, समाज में अब जो कुछ हो रहा है, उसके लिए अब हम किसी साम्राज्यवादी ताकत को दोषी नहीं ठहरा सकते। हम नहीं कह सकते कि कोई हमें धर्म के नाम पर लड़ा रहा है। हम नहीं कह सकते कि जातीयता के पापों को धोने में कोई हमारी रुकावट बना हुआ है।

## खाना-खजाना

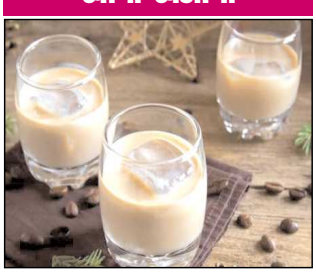

### तंत्र के बाद ट्राई करें ये कूल डेजर्ट आयरिश क्रीम लिकर रेसिपी

**सामग्री -**

**एक कप (लाइट) क्रीम, 400 द्रव्य (मिली.) मीठा गाढ़ा दूध, 1 2/3 कप आयरिश विस्की, 1 टी स्पून इंस्टैंट कॉफी, 2 टेबल स्पून कॉक्लेट सीरप, 1 टी स्पून वनीला, 1 टी स्पून बादाम का तेल**

**विधि -**

**सभी सामग्री का मिक्सर में डालकर 30 सेकंड के लिए चलाएं। टाइट बोतल में डालकर उसे फ्रिज में ठंडा होने के लिए रख दें। पीने से पहले बोतल को अच्छे से हिला लें। इसे दो महीने तक रखा जा सकता है।**